

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 11

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आन्दोलन

भाग - 3

प्रीतेश जोशी

रॉलेट एक्ट

↓

सॅ॰ सत्याग्रह → राष्ट्रीय

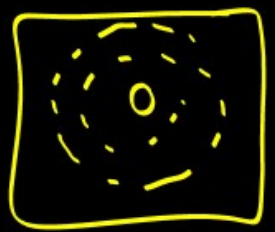
↳ जलियावाला

↳ असहयोग + खिलाफत

क्षेत्र → राष्ट्रीय → जन लोक

जन नेता :- सत्याग्रह अहिंसा

- 1922 तक गांधी जी ने भारतीय राष्ट्रवाद को एकदम परिवर्तित कर दिया।
- अब यह व्यावसायिकों व बुद्धिजीवियों का ही आंदोलन नहीं रह गया था, अब हजारों की संख्या में किसानों, श्रमिकों और कारीगरों ने भी इसमें भाग लेना शुरू कर दिया। → सभी वर्ग
- उन्होंने इस बात की प्रशंसा की कि गाँधी जी इनकी ही तरह के वस्त्र पहनते थे, उनकी ही तरह रहते थे और उनकी ही भाषा में बोलते थे तथा उनसे घनिष्ठ संबंध भी स्थापित कर लेते थे।



- वे अन्य नेताओं की तरह सामान्य जनसमूह से अलग नहीं खड़े होते थे।
- गाँधी जी लोगों के बीच एक साधारण धोती में जाते थे।
- प्रत्येक दिन का कुछ हिस्सा वे चरखा चलाने में बिताते थे।
- सूत कताई के कार्य ने गाँधी जी को पारंपरिक जाति व्यवस्था में प्रचलित मानसिक श्रम और शारीरिक श्रम की दीवार को तोड़ने में मदद दी।

जन नेता

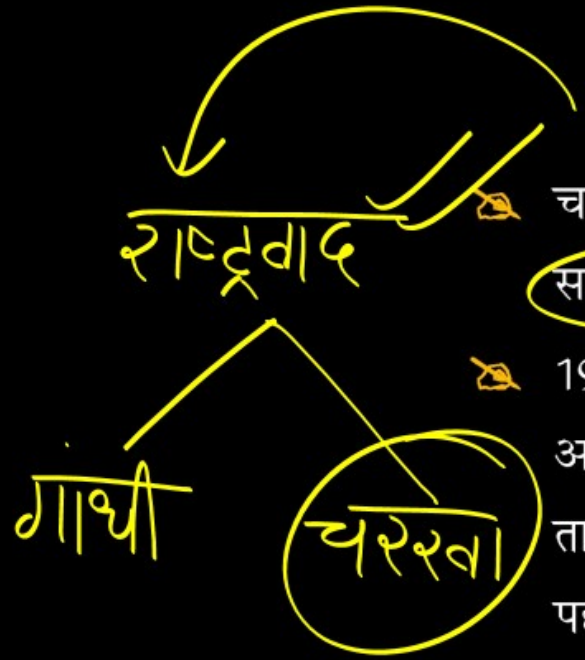
अफवाहें :-

- गाँधी जी जहां भी गए वहीं उनकी चमत्कारिक शक्तियों की अफवाहें फैल गयीं।
- गाँधी जी का विरोध करने वालों के लिए भयंकर परिणाम की बात बताती कहानियां थी।
- गाँधी जी की आलोचना करने वाले गाँव के लोगों के घर रहस्यात्मक रूप से गिर गए अथवा उनकी फसल चौपट ओ गयी।

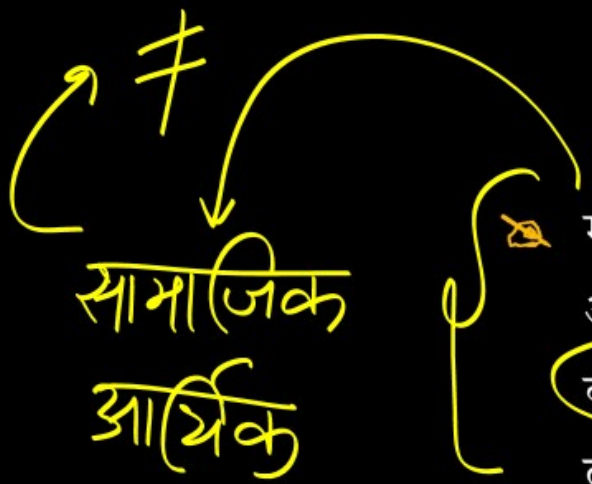
उनके भाषणों के दौरान कैसा माहौल होता था इस पर गोरखपुर के एक हिंदी समाचारपत्र ने यह रिपोर्ट लिखी है :

- भटनी में गाँधी जी ने स्थानीय जनता को संबोधित किया और इसके बाद ट्रेन गोरखपुर के लिए रवाना हो गयी।
- नूनखार, देवरिया, गौरी बाजार, चौरी-चौरा और कुसुमही (स्टेशनों) पर 15 से 20 हजार से कम लोग नहीं थे.....
- महात्मा जी कुसुमीही के दृश्य को देखकर बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि जंगल के बीच स्थित होने के बावजूद उस स्टेशन पर 10,000 से कम लोग नहीं थे। प्रेम से अभिभूत होकर कुछ लोग रोते हुए देखे गए।

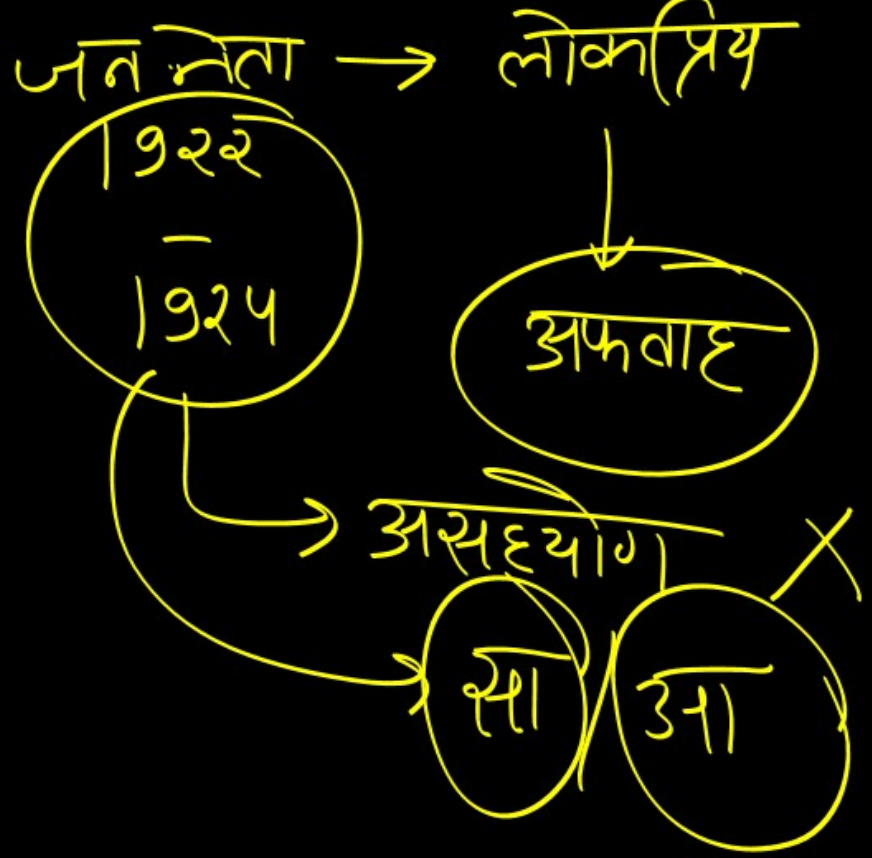
- देवरिया में लोग गांधी जी को भेनी (दान) देना चाहते थे किंतु इसे उन्होंने गोरखपुर में देने को कहा। लेकिन चौरी-चौरा में एक मारवाड़ी सज्जन ने किसी तरह उन्हें कुछ दे दिया। इसके बाद यह क्रम रूका ही नहीं।
- एक चादर फैला दी गई जिस पर रूपयों और सिक्कों की बारिश होने लगी।
- यह दृश्य था ... गोरखपुर स्टेशन के बाहर महात्मा एक ऊँची गाड़ी पर खड़े हो गए और लोगों ने कुछ मिनटों के लिए उनके दर्शन कर लिए।

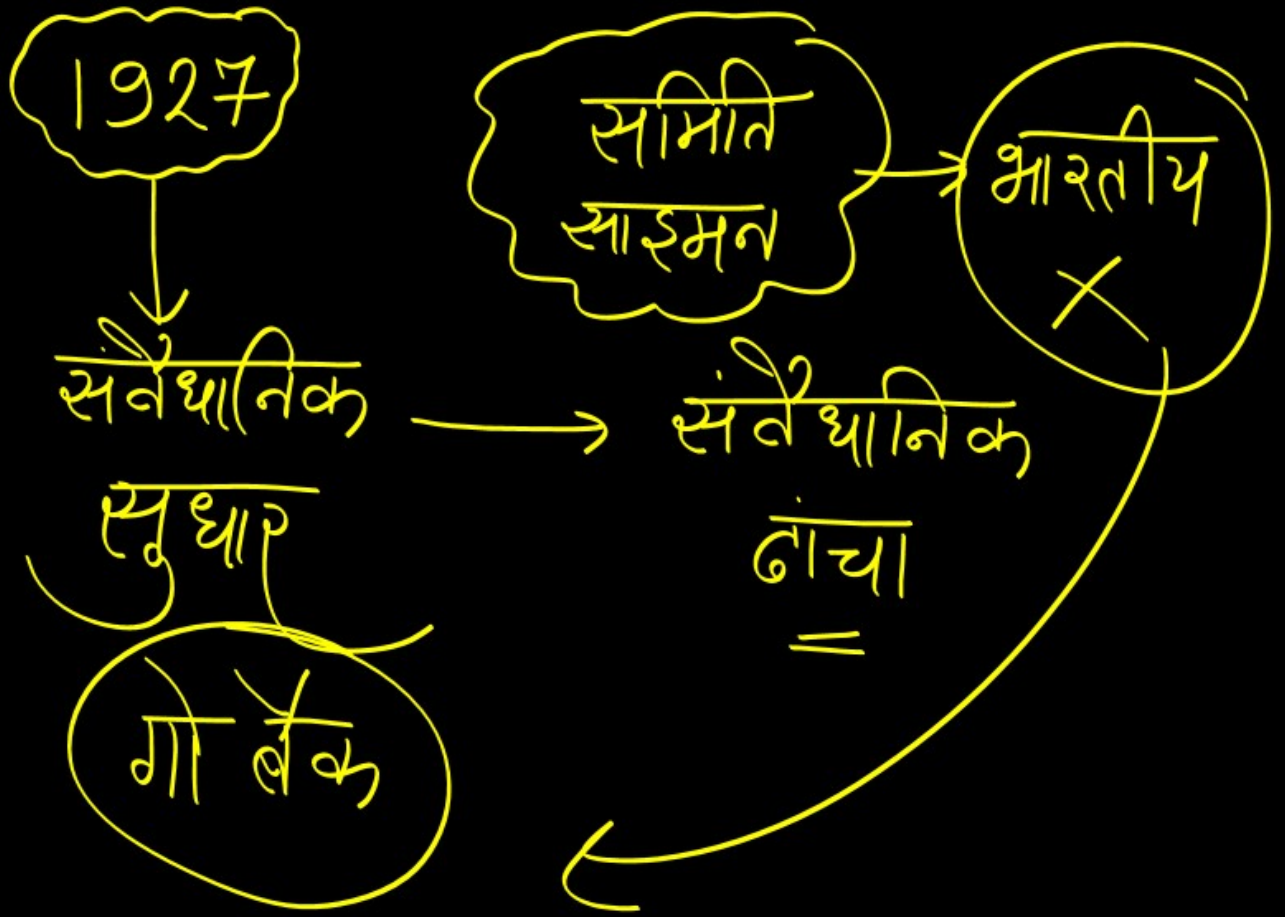


- चरखे के साथ महात्मा गांधी भारतीय राष्ट्रवाद की सर्वाधिक स्थायी पहचान बन गए।
- 1921 में दक्षिण भारत को यात्रा के दौरान गाँधी जी ने अपना सिर मुँडवा लिया और गरीबों के साथ अपना तादात्म्य स्थापित करने के लिए उन्होंने सूती वस्त्र पहनना आरंभ कर दिया।
- उनका यह नया रूप तपस्या और संयम का प्रतीक भी बना और ये ऐसी विशेषताएं थीं जिनका गांधी जी, आधुनिक विश्व की उपभोक्तवादी संस्कृति के प्रतिउत्तर में, गुणगान करते थे।



- महात्मा गाँधी फरवरी 1924 में जेल से रिहा हो गए और अब उन्होंने अपना ध्यान घर में बुने कपड़े (खादी) को बढ़ावा देने तथा छूआ-छूत को समाप्त करने पर लगाया।
- गाँधी जी राजनीतिक जितने थे उतने ही वे समाज सुधारक थे। उनका विश्वास था कि स्वतंत्रता के योग्य बनने के लिए भारतीयों को बाल विवाह और छूआ-छूत जैसी सामाजिक बुराइयों से मुक्त होना पड़ेगा।
- एक मत के भारतीयों को दूसरे मत के भारतीयों के लिए सच्चा संयम लाना होगा और इस प्रकार उन्होंने हिंदू-मुसलमानों के बीच सौहार्द्र पर बल दिया।


जननेता → लोकप्रिय
1922
–
1924
अफवाह
असहयोग
सा
उसा


1927
सैंवैधानिक सुधार
गो बैक
सिमिति साइमन
भारतीय
X
संवैधानिक ढांचा

अध्यक्ष – जॉन साइमन

- असहयोग आंदोलन समाप्त होने के कई वर्ष बाद तक गाँधी जी ने अपने आपको समाज सुधार कार्यों पर केन्द्रित रखा।
- 1928 ई. में उन्होंने पुनः राजनीति में प्रवेश करने की सोची।

एक भी भारतीय

साईमन कमीशन – 1927

- साईमन कमीशन के विरूद्ध अखिल भारतीय अभियान चलाया जा रहा था।

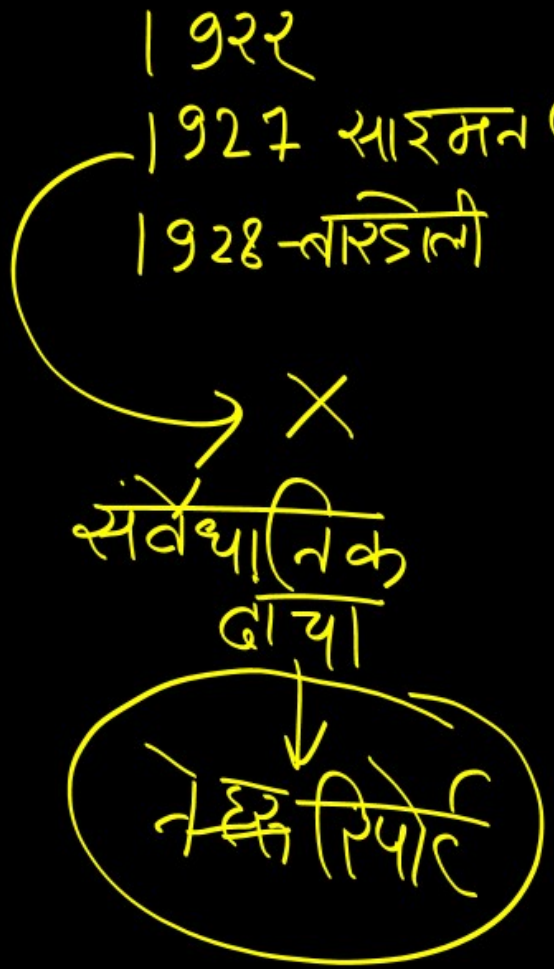
बारदोली किसान आंदोलन – 1928

- गांधी जी ने इन दोनों आंदोलनों में भाग नहीं लिया।

Q. महात्मा गांधी से जुड़ी अफवाहें को विस्तार पूर्वक लिखें?

Q. महात्मा गांधी एक जन नेता कैसे बने?

Q. 1922-1928 तक महात्मा गांधी द्वारा किए गए समाज सुधार कार्यों स्पष्ट करें?



1929 कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन –

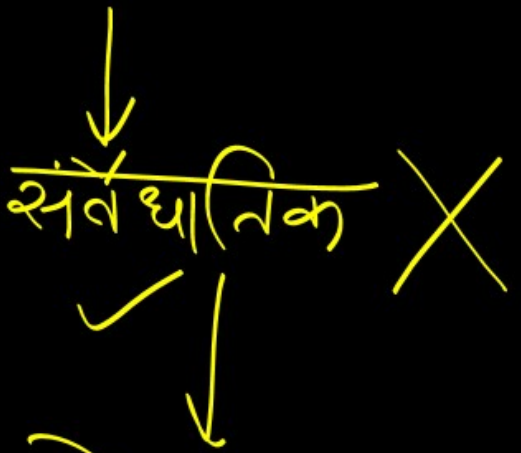
- यह अधिवेशन दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण था –

1. जवाहर लाल नेहरू का अध्यक्ष के रूप में चुनाव जो युवा पीढ़ी को नेतृत्व सौंपने का प्रतीक था।
2. 'पूर्ण स्वराज' अथवा पूर्ण स्वतंत्रता की उद्घोषणा।

- अब राजनीति की गति एक बार फिर बढ़ गई थी।
- 26 जनवरी 1930 को पहला पूर्ण स्वराज दिवस मनाया गया।

26 नव 1949
26 जनवरी

1927 साइमन ©





1929 – लाहौर अधि

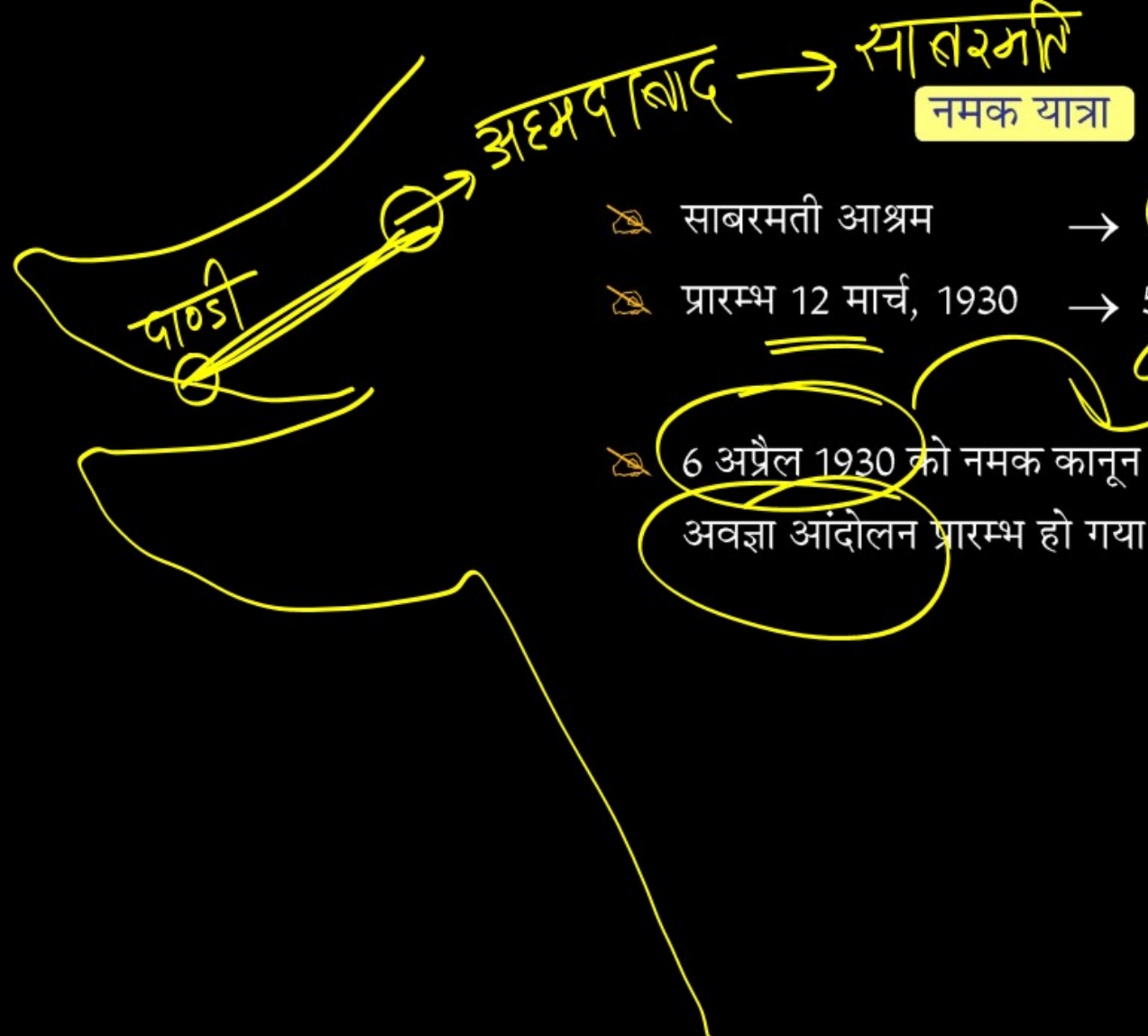
1930 → 26 जनवरी

पूर्ण स्वराज दिवस

चेतावनी → ॥ मांगे

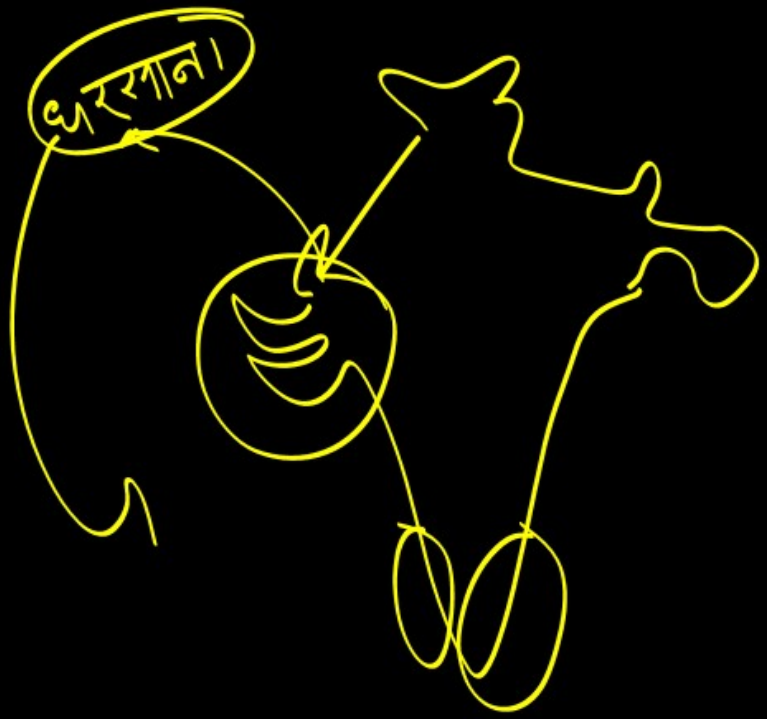
दाण्डी यात्रा

गाँधी जी ने घोषणा की कि वे ब्रिटिश सरकार के सर्वाधिक घृणित कानूनों में से एक, जिसने नमक के उत्पादन और विक्रय पर राज्य को एकाधिकार दे दिया है, को तोड़ने के लिए एक यात्रा का नेतृत्व करेंगे।



नमक यात्रा

- साबरमती आश्रम → दाण्डी
- प्रारम्भ 12 मार्च, 1930 → 5 अप्रैल, 1930
- 6 अप्रैल 1930 को नमक कानून तोड़ा और सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारम्भ हो गया।


धरखान।





- पूरे देश में अलग-अलग कानूनों का उल्लंघन किया गया।
- किसानों ने दमनकारी औपनिवेशिक वन कानूनों का उल्लंघन किया।
- कुछ कस्बों में फैक्ट्री कामगार हड़ताल पर चले गये। वकीलों ने ब्रिटिश अदालतों का बहिष्कार कर दिया।
- विद्यार्थियों ने सरकारी शिक्षा संस्थानों में पढ़ने से इन्कार कर दिया।
- सरकार ने लगभग ~~60,000~~ लोगों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार होने वालों में गाँधी जी भी थे।

यात्रा → प्रिन्ट मीडिया

संवाद :-

नमक यात्रा कम से कम तीन कारणों से उल्लेखनीय थी –

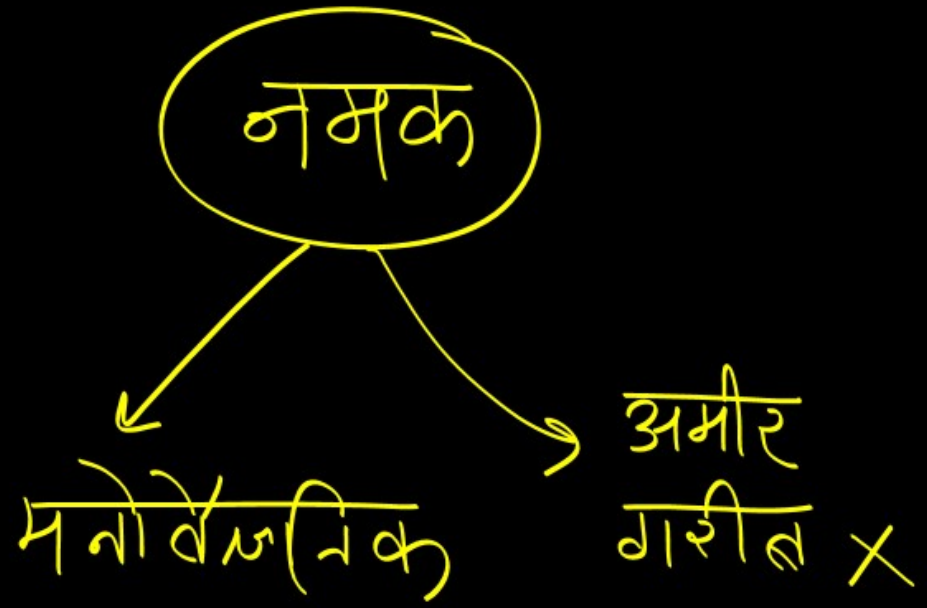
1. यही वह पहली घटना थी जिसके चलते महात्मा गांधी दुनिया की नजर में आए।
2. यह पहली राष्ट्रवादी गतिविधि थी जिसमें औरतों ने भी बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया।

समाजवादी कार्यकर्ता कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने गांधी जी को समझाया कि वे अपने आंदोलनों को पुरूषों तक ही सीमित न रखें।

व्यापारी लटेरे

3. नमक यात्रा के कारण ही अंग्रेजों को यह अहसास हुआ था कि अब भारत में उनका राज बहुत दिन तक नहीं टिक सकेगा और उन्हें भारतीयों को भी सत्ता में हिस्सा देना पड़ेगा।

तिरंगी + 60,000 महिला वकील किसान


नमक
मनोवैज्ञानिक
अमीर
गरीब ×